भगतसिंह ने कहा

"भारतीय रिपब्लिकं के नौजवानो, नहीं सिपाहियो, कतारबद्ध हो जाओ। आराम के साथ न खड़े रहो और न ही निरर्थक कदमताल किये जाओ। लम्बी दरिद्रता को, जो तुम्हें नाकारा कर रही है, सदा के लिए उतार फेंको। तुम्हारा बहुत ही नेक मिशन है। देश के हर कोने और हर दिशा में बिखर जाओ और भावी क्रान्ति के लिए, जिसका आना निश्चय है, लोगों को तैयार करो। फर्ज के बिगुल की आवाज सुनो। वैसे ही खाली जिन्दगी न गवाओ। बढ़ो तुम्हारी जिन्दगी का हर पल इस तरह के तरीके और तरतीब ढूंढने में लगना चाहिए, कि कैसे अपनी पुरातन धरती की आंखों में ज्वाला जागे और यह एक लम्बी अंगड़ाई लेकर जाग उठे। ...तब एक भयानक भूचाल आयेगा, जो बड़े धमाके से गलत चीजों को नष्ट कर देगा और साम्राज्यवाद के महल को कुचलकर धूल में मिला देगा और यह तबाही महान होगी।"

(हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेशन के घोषणापत्र से)

"कानून की पवित्रता तभी तक रखी जा सकती है जब तक वह जनता के दिल यानी भावनाओं को प्रकट करता है। जब यह शोषणकारी समूह के हाथों में एक पुर्जा बन जाता है तब अपनी पवित्रता और महत्व खो बैठता है... ज्यों ही कानून सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करना बन्द कर देता है त्यों ही जुल्म और अन्याय को बढ़ाने का हथियार बन जाता है। ऐसे कानूनों को जारी रखना सामूहिक हितों पर विशेष हितों की लाभपूर्ण जबरदस्ती के सिवाय कुछ नहीं है।"

(भगतसिंह सहित छह क्रान्तिकारियों द्वारा लाहौर साजिश केस की सुनवाई कर रहे विशेष ट्रिब्यूनल के कमिशनर को लिखे पत्र से)